RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

प्राचीन भारतीय बौद्धकाल में सदेकम्म द्वारा चिकित्सा

डॉ0 दयानन्द कुमार

इतिहास विभाग, मगध विश्वविद्यालय, गया

हमने रोगों तथा उनकी चिकित्सा का विवरण यथा स्थान देखा। कुछेक रोगों की चिकित्सा शल्यकर्म से ही करना पड़ता था तो कुछेक का उपचार औषधि सेवन से होता था। ऐसी भी प्रक्रियाओं का विवरण मिलता है जिनमें औषधि का प्रयोग प्रायः अल्पमात्रा अथवा नहीं होता था। अपितु मात्रा प्राकृतिक प्रयोगों से ही रोग को दूर कर दिया जाता था।

प्राकृतिक चिकित्सा की प्रक्रियाओं में मुख्यतः स्वेदन, विरेचन, मिट्टी, जल अथवा वायु आदि का प्रयोग किया जाता था जिनके माध्यम से रोगों का उपचार होता था ।

प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा श्लेषम आदि रोग को ठीक करने का एक निश्चित स्थान होता था जिसे ''जन्ता घर'' कहा गया है। पालि साहित्य में अनेक स्थलों पर इसका वर्णन है जहाँ अग्नि से शरीर में अत्यधिक स्वेदन कर चिकित्सा की जाती थी। चुल्लवग्ग में ''जनताघर'' के उपयोग, निर्माण आदि का उल्लेख है।

''जन्ताघर'' ऐसा एक स्थान विशेष था जिसमें अग्नि प्रज्वलित कर दी जाती थी और जब वह निर्धूम हो जाती थी तब उसके पास बैठे शरीर को सब ताप कर उससे पसीना निकाल, शरीर के विकार को दूर किया जाता था। ऐसा भी विवरण प्राप्त है कि छोटे जन्ताघर के बीच में आग जला देते थे किन्तु उससे उपचार ठीक नहीं होता था। जब बुद्ध के आदेशानुसार यह विज्ञाप्ति किया गया कि यदि ''जन्ताघर'' छोटा हो तो अग्नि का स्थान एक किनारे पर हो और यदि ''जन्ताघर'' का आकार विशद हो तो अग्नि–स्थान बीच में होना चाहिए। प्रारम्भ में भिक्षुलोग जब ''जन्ताघर'' में बैठ पसीना निकालने के लिए अग्नि का सेवन करते थे तब विशेषतः मुख तथा शरीर के भाग झुलसने लगते थे। इसके बचाव के निमित्त बुद्ध से अनुज्ञा प्राप्त कर वे लोग मुख तथा पूरे शरीर के अन्य लोगों में गीली मिट्टी लपेट कर बैठते थे और जब मिट्टी सूख जाती की तब उसे पानी से पुनः भींगों देते थे। ''जन्ताघर'' में पानी के लिए ''उदकथान'', ''उदकसरावक'' जैसे जलपात्रा भी रखे रहते थे।

''जन्ताघर'' एक प्रकार से तापगृह था। रायस डेविस तथा चाइल्डर्स दोनों न ही इसे ''हांटवांय रूम'' कहा है और इसका सादृश्य ''टर्किश वांथ'' से किया है। अभिधानप्पदीपिका में ''जन्ताघर'' को अग्गिसाला'' का पर्यायवाची शब्द कहा गया है।

चरक ने ''जन्ता का स्वेद'' के क्रम ''जन्ताघर'' अथवा ''कुटागार'' निर्माण का विवरण किया है। वहाँ उल्लिखित है कि ''कुटागास'' की ऊँचाई सोलह हाथ और चौड़ाई भी सोलह हाथ, चारों और से गोलाकार होना चाहिए। इस घर के अन्दर दिवार के चारों ओर किवाड़ तक एक हाथ भरकर उफँची चबुतरा बनानी चाहिए। मध्य में चार हाथ विस्तृत पुरुष के परिभाषा की मिट्टी से बनी, कन्दूक आकार की बहुत सूक्ष्म, छोटे–छोटे छिद्रो वाला अंगार कोष्ठ रूप स्तम्भ बनाये और इसका ढक्कन भी बनाये रहे। ''जन्ताघर वेद हेतु खैर तथा अश्वकर्ण (ढाक) की लकड़ियों को जला, धूमरहित कर रोगों को वातहरतेल लगा, पसीना के लिए प्रवेश करना चाहिए। जब पसीना भली प्रकार निकल जाय तथा शरीर में हलकापन अनुभव हो तब दरवाजे से बाहर निकल, कुछ देर ठहर कर थोड़ा गर्म पानी से इच्छानुसार स्नान करके भोजन करना चाहिए।

उपरोक्त इस विशद विवरण से स्पष्ट है कि प्राकृतिक चिकित्सा में शरीर से पसीना निकाल कर व्याधियों के उपचार का बड़ा प्रचलन था। यही कारण रहा कि भिक्षुसंघ में भी चिकित्सा हेतु इसे ग्रहण करना पड़ा।

साधारणतः शरीर के आक्रान्त भाग अथवा सारे शरीर से पसीना निकलने की प्रक्रिया को ''सेदकम्म'' कहा गया है। पालि त्रिपिटक के महावग्ग में इस प्रक्रिया के विभिन्न भेद बतलाये हैं यथा– ''सम्भारसेद'', ''मद्दासेद'' ''भर्घौदक'', ''उदकोट्ठक''। उपचार भेद से इनकी अलग–अलग विधियों है जिनके प्रयोग से श्लेष्मादि दोषों से उत्पन्न विकारों को पसीना से निकाल कर रोग ठीक किया जाता था। सुश्रुत ने ''स्वेदकर्म'' चार प्रकार के बतलाये हैं यथा– तापस्वेद, उष्मवेद, उपनाहस्वेद और द्रबवेद। चरक के वेदक्रर्म का तेरह विभेद बताया है यथा– जेन्ताकस्वेद, कुटीस्वेदे, कूप–वेद आदि।

समन्तपासादिका में वर्णित है कि शरीर से पसीना निकालने के लिए विभिन्न प्रकार की वनस्पत्तियों के छोटे–छोटे टुकड़ों का प्रयोग विशेष विधि से किया जाता था। महावग्ग में वर्णित है कि एकबार आयुष्मान् पिलिन्दवच्छ को ''अर्धवात'' हो

RRIJM 2015, All Rights Reserved

गया था और साधारण ''सेदकम्म'' द्वारा रोग ठीक नहीं हुआ था। तब भगवान् बुद्ध ने ''सम्भारसेद'' की प्रक्रिया द्वारा पसीना निकालने की अनुमति उन्हें दी थी। सुश्रुत में उल्लिखित है कि औषधि गुणसम्पन्न पत्तियों के काढ़े को घड़े में भर दे और शरीर को चारों ओर से ढक कर घड़े की निकलती हुई भापफ से स्वेदन करे अथवा घड़े में एक छिद्र करके उसमें हाथी के सूंड के समान एक टोटी लगावे और घड़े का मुख बन्द करके उस टोटी द्वारा भापफ लेवे। इसे वपफारा भी कहा जाता है। इस विवरण से प्रतीत होता है कि यही ''सम्भार सेद'' जिसका उल्लेख महावग्ग में हुआ है । इसका प्रयोग वातरोग में विशेष लाभकारी होता था यह उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है।

पालि त्रिपिटक के महावग्ग में वर्णित है कि एकबार भिक्षु पिलिन्दवच्छ को ''अर्धवात'' हो गया था और ''सम्भारसेद'' से रोग ठीक नहीं हो सका था। इसलिए भगवान् बुद्ध ने ''महासेद'' की प्रक्रिया से पसीना निकालने की अनुमति दी थी।

समन्तपासादिका में उल्लिखित है कि नाना प्रकार की वनस्पतियों को जल में डाल तथा उन्हें पकाकर उस पानी से उन पत्तों द्वारा शरीर को भिंगा–भिंगा कर ''स्वेद क्रर्म'' करना चाहिए। ऐसा प्रतीत होता है कि सम्भवतः अन्य पत्तियों के साथ ''भर्धं'' (भाग) की पत्तियों का विशेष रूप से व्यवहार होता रहा हो और इसलिए इस विधि का नाम ''भर्धौदक'' रखा गया।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि ''सेदकम्म'' द्वारा अनेक रोगों की चिकित्सा की जाती थी किन्तु सुश्रुत ने कुछेक रोगियों की इसका प्रयोजन निषेध बतलाया है यथा–पाण्डुरोगी, प्रमेही, क्षमरोगी, दुर्बल, गर्भिणी, तथा उदर रोगी। इन रोगों में स्वेदन करने से शरीर क्षय हो जाते हैं और रोगों का विकार असाध्य हो जाते है। किन्तु पालि साहित्य में ऐसा विस्तृत विवेचन अनुपलब्ध है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. अशोक का शिलालेख : डॉ0 राजवली पाण्डेय।
2. पाणिनी कालीन भारतवर्ष : वासुदेव शरण अग्रवाल।
3. मिलिन्द प्रश्न : भिक्षु जगदीश काश्यप।
4. बुद्धचर्या : राहुल सांकृत्यायन।
5. विनय पिटक : राहुल सांकृत्यायन।
6. प्राचीन भारत का इतिहास : श्री भागवतशरण उपाध्याय, ग्रंथमाला कार्यालय, पटना।

RRIJM 2015, All Rights Reserved